# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

| परीक्षा का विषय | विषय कोड | परीक्षा का माध्यम |
|---|---|---|
| हिन्दी | 0 0 1 | हिन्दी |

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

क्रमांक 319- 2231289

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंकों में | 2 | 9 | 4 | 6 | 3 | 7 | 1 | 2 | 8 |
| शब्दों में | नौ | चार | छः | तीन | सात | एक | दो | आठ |

| उदाहरणार्थ | 1 | 1 | 2 | 4 | 3 | 9 | 5 | 6 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक | एक | दो | चार | तीन | नौ | पांच | छः | आठ |

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में — शब्दों में —

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 05

ग :– परीक्षा का दिनांक 02 | 03 | 2019

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकण्डरी परीक्षा 2019

462015

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

| पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर | केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर |
|---|---|
| Renuka ... | |

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

| उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा | परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा |
|---|---|
| | डॉ ... ुशवाह (व.भ.) शास. ... उटीला पंजीयन क्र. 1410 |

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें।

| प्रश्न क्रमांक | पृष्ठ क्रमांक | प्राप्तांक (अंकों में) |
|---|---|---|
| 1 | | |
| 2 | | |
| 3 | | |
| 4 | | |
| 5 | | |
| 6 | | |
| 7 | | |
| 8 | | |
| 9 | | |
| 10 | | |
| 11 | | |
| 12 | | |
| 13 | | |
| 14 | | |
| 15 | | |
| 16 | | |
| 17 | | |
| 18 | | |
| 19 | | |
| 20 | | |
| 21 | | |
| 22 | | |
| 23 | | |
| 24 | | |
| 25 | | |
| 26 | | |
| 27 | | |
| 28 | | |

कुल प्राप्तांक शब्दों में

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mmx16

de'smat

② [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ    पृष्ठ 2 के अंक    कुल अंक

प्रश्न क्र.

उत्तर- 1

(i) 'रेवती'

(ii) 'बालकृष्ण शर्मा नवीन'

(iii) 'गानघन'

(iv) 'प्रगतिवाद'

'ध्यान न देना'

B
S
E

उत्तर- 2

(i) 'सोम ठाकुर'

(ii) 'सातवें वर्ष में'

(iii) 'चिरगाँव'

(iv) 'कमल'

'ऊँट के मुँह में जीरा'

प्रश्न क्र.

उत्तर-3

(i) 'असत्य'

(ii) 'सत्य'

(iii) 'सत्य'

(iv) 'सत्य'

(v) 'असत्य'

BSE

उत्तर-4

| (अ) | (ब) |
|---|---|
| (i) मंगल वर्षा | भवानी प्रसाद मिश्र |
| (ii) अध्यक्ष महोदय | व्यंग्य विधा |
| (iii) मेरे जीवन के कुछ चित्र | डॉ. रामकुमार वर्मा |
| (iv) लक्ष्यार्थ | मुहावरा |
| (v) रस के अंग | चार |

SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

**उत्तर- 5**

(i) मालवी, निमाड़ी

(ii) 'देह नश्वर है'

(iii) 'व्यतिरेक अलंकार'

(iv) 'आचार्य विनोबा भावे'

(v) 'अस्वाद'

BSE

**उत्तर-6**

पार्वती और रूखी डाल में समानता व्यक्त करते हुए कवि ने बताया है, कि जिस प्रकार शिवजी को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए शैलपुत्री ने पत्ते भी खाना छोड़ दिया था, और अत्यन्त कमजोर हो गयी थी। इधर पतझड़ के आने से डालें पत्तों से रहित हो जाती है।

5

पृष्ठ 5 के अंक

कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

उत्तर- 7

कबीरदास जी ने साधु सज्जनों की संगति करने को कहा है, उससे सारे क्लेश मिट जाते हैं।

उत्तर- 8 (04)

कवि ने भारतमाता की जय- जयकार का आह्वान भारत के वीरों, श्रमकर्ताओं तथा रचनाकारों से किया है। वे भारत को मंगलमय और उन्नतिशील बनाएंगे।

उत्तर- 9

केवट की जीविका का एकमात्र आधार (साधन) नाव है।

उत्तर- 10 (04)

चातक की मधुर ध्वनि पीउ- पीउ विरही को प्रियतम की याद दिलाकर उसके विरह ताप को बढ़ा देती हैं, इसलिए चातक को घातक कहा गया है।

प्रश्न क्र.

उत्तर-11

जीवन के चिर सुख का अमृत खोजने के लिए गौतम वनों, जंगलो, पहाड़ो और न जाने कहाँ-कहाँ चले गए थे।

उत्तर-12 (04)

युद्ध में आज स्वजन सम्बन्धियों की चार पीढ़ियाँ एकत्र हुई थी।

उत्तर-13 (04)

गाँव की संध्या में पूजा भात घंटियों की टनटनाहट और शंख घड़ियालों की मिली-जुली सुरलहरी में प्रकट होता है।

उत्तर-14

बाँसुरी की मीठी टेर सुनकर देवकी ने वसुदेव जी से कहा मानो जैसे मेरे भीतर कोई मधुर संगीत गा रहा हो, जैसे पुष्पों की बगिया मेरे हृदय में महक उठी हो, मेरे

प्रश्न क्र.

हृदय में मानो नारायण स्वयं बालक बनकर क्रिडाएँ कर रहे हो।

उत्तर-15

(i) अब आपका स्वास्थ्य कैसा है?

(ii) उसका हो[illegible] उड़ गया।

उत्तर-16

विभावना अलंकार :- काव्य में जहाँ कारण के न होने पर कार्य हो, वहाँ विभावना अलंकार होता है।

उदाहरण - "नाचि अचानक ही उठे, बिनु पावस वन मोर"

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर-17 (08)

लेखिका के घर मानो दुग्ध महोत्सव आरंभ हुआ, गौरा प्रातः शाम बारह शेर के लगभग दूध देती थी, अतः लालमणि के लिए कई शेर छोड़ देने पर भी इतना अधिक शेष रहता था कि आस-पास के बालगोपाल से लेकर कुत्ते-बिल्ली सब पर मानो 'दूधो नहाओ' का ~~आर्शीर्वाद~~ आशीर्वाद फलित होने लगा।

B
S
E

उत्तर-18

| भाषा | विभाषा |
| --- | --- |
| (1) भाषा बोली का पूर्ण विकसित रूप है। | जबकि विभाषा बोली का अर्द्ध विकसित रूप है। |
| (2) भाषा में साहित्य की महत्ता तथा प्रचुरता होती है। | इसमें ~~साहित्यतो~~ साहित्य तो रहता है, परंतु उसे महत्ता प्राप्त नहीं है। |
| (3) भाषा का क्षेत्र विस्तृत रहता है। | विभाषा का क्षेत्र सिमित रहता है। |

9

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 9 के अंक = अंक

मध्यप्रदेश

EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

उत्तर-19 (01)

शृंगार - 'रति'

उदाहरण - "राम के रूप निहारति जानकी, कंगन के नग की परछाई ।।"

---

उत्तर-21

प्रगतिवादी की विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

① शोषकों के प्रति विद्रोह व शोषितों से सहानुभूति-

प्रगतिवादी कवियों ने किसानों, मजदूरों पर किए जाने वाले पूंजीपतियों के प्रति अत्याचारों के प्रति अपना विद्रोह व्यक्त किया है।

② ईश्वर के प्रति अनास्था -

इस काल के कवियों ने ईश्वर के प्रति अनास्था का भाव व्यक्त किया है, वे ईश्वरीय शक्ति की तुलना में मानवीय शक्ति को अधिक महत्व देते हैं।

| कवि | रचनाएँ |
|---|---|
| ① शिवमंगल सिंह सुमन | हिल्लोल, प्रलय सृजन |
| ② सूर्यकांत त्रिपाठी निराला | अनामिका, कुकुरमुत्ता |

B
S
E

(10) + [ — ] =

पृष्ठ 10 के अंक

प्रश्न क्र.

उत्तर-22

"साहित्यिक परिचय (शरद जोशी)"

दो रचनाएँ
① 'पिछले दिनों'
② 'परिक्रमा'

भाषा-शैली — शरद जोशी जी की भाषा शैली परिष्कृत है।

जोशी जी ने अपनी भाषा खड़ी बोली में प्रस्तुत की है। जोशी जी ने व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग भी अपने रचनाओं में किया है। जोशी जी की भाषा अत्यन्त सरल, सुबोध है। जोशी जी ने खड़ी बोली के साथ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी किया है।

जोशी जी ने अपने युग में प्रचलित सभी शैलियों में काव्य रचना की है। जोशी जी ने व्यंग्य, हास्य, भावात्मक आदि विविध शैलियों के रूप अपनाए हैं। जोशी जी की शैलियाँ मिश्रित है। उन्होंने अपनी एकांकियों में संवाद शैली को अधिक महत्व दिया है। आवश्यकता पढ़ने पर सभी को अपनाया है।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

साहित्य में स्थान - जोशी जी अपनी विभिन्न रचनाओं के अनुपम ~~वर्णि~~ वर्णन से संपूर्ण विश्व में विख्यात है। हिन्दी अपने निबंधो की व्याख्या मे सर्वश्रेष्ठ है। वे महान साहित्यकार है।

उत्तर - 23

काव्यगत विशेषताएँ 'जयशंकर प्रसाद'

दो रचनाएँ
① 'कामायनी'
② 'लहर'

काव्यगत विशेषताएँ - प्रसाद की भाषा की एक कोमार्यतापूर्ण बानगी देखिए।

" नील परिधान बीच सुकुमार "

भावपक्ष :- प्रसाद जी के भावपक्ष की विशेषताएँ निम्नलिखित है।

① दार्शनिक विचारधार - 'प्रसाद' एक दार्शनिक कवि थे। उनके महाकाव्य ~~आनंदवाद~~ (कामायनी) में आनंदवाद की प्रतिष्ठा की गई है।

12 [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 12 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

(2) प्रेम और सौन्दर्य की विवेचना :- प्रसाद जी प्रेम और सौन्दर्य के उपासक थे, छायावादी कि कवियों ने प्रकृति की हर वस्तु में सौन्दर्य का वर्णन किया है।

(3) प्रकृति चित्रण - प्रसाद जी ने प्रकृति का रमणीय चित्रण किया है।

कलापक्ष - प्रसाद जी के कलापक्ष की विशेषताएं निम्नलिखित है।

भाषा - प्रसाद जी की खड़ी बोली है, प्रसाद जी ने संस्कृत भाषा का प्रयोग भी किया है।

शैली - शुक्ल जी ने अपने युग में प्रचलित सभी शैलियों में काव्य रचना की है।

साहित्य में स्थान - प्रसाद जी आधुनिक काल के कवियों में अन्यतम है, इनका कामायनी नामक महाकाव्य विश्व काव्य का श्रृंगार है, भावपक्ष व कलापक्ष की दृष्टि से प्रसाद का काव्य उच्च कोटि का है।

13 [ ] + [ ] = [ ]
पृष्ठ पृष्ठ 13 के प्राप्तांक कुल अंक

प्रश्न क्र.

उत्तर - 24 (04)

संकेत - "यह संसार ______ सार्थकता है।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्य हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्वाति' में संग्रहित 'खेल' नामक कहानी से लिया गया है। इसके लेखक 'जैनेन्द्र कुमार' है।

प्रसंग - इसमें ~~कवि~~ लेखक संसार की क्षणभंगुरता पर अपने विचार प्रस्तुत करता है।

व्याख्या - ~~कर~~ लेखक संसार की क्षणभंगुरता की ओर प्रकाश डालते हुए बताते हैं कि गंगा के तट पर बालक व बालिका मात्र दो पात्र है। बालिका अपने हाथों से भाड़ बनाती है व बालक उस भाड़ को नष्ट कर देता है। भाड़ के माध्यम से कवि ने यह बताया है कि यह संसार क्षण में नष्ट होने वाला है। इसमें सुख क्या है, और दुःख क्या है। इस नाश होने वाले ~~सारी~~ संसार से मोह नहीं रखना चाहिए।

विशेष - (1) संसार की नाशवरता पर प्रकाश डाला है।
(2) शांत रस है।
(3) उपमा अलंकार है
(4) प्रस्तुत उचित को दर्शाया गया

प्रश्न क्र.

उत्तर-25 (04)

संकेत- "मैया कबहि ___ ___ ___ ___ भुई लोटी।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्वाति' में संग्रहित 'वात्सल्य और स्नेह' के शीर्षक 'सूर के बालकृष्ण' से अवतरित है। इसके कवि सूरदास जी है।

प्रसंग- यहाँ पर बालक कृष्ण अपनी चोटी के न बढ़ने पर माता यशोदा से प्रश्न कर रहे हैं।

व्याख्या- बालक कृष्ण माता यशोदा से कहते हैं कि हे। मैया मेरी चोटीं कब बढ़ेगी, कितना समय मुझे दुध पीते-पीते हो गया है। फिर भी यह छोटी ही है, तुम मुझसे रोज यह कहतीं हो कि दुध पीने से मेरी चोटी भी बलदाऊ की तरह लम्बी व मोटी हो जाएगी, काढ़ते समय, गुँथते समय, नहाते व पोछते समय यह जमीन पर लोट जाया करेगी। किंतु यह छोटी ही है।

काव्य सौन्दर्य- (1) श्री कृष्ण की मधुर बोली।
(2) ब्रजभाषा का सुन्दर प्रयोग
(3) वात्सल्य रस है।
(4) अनुप्रास अलंकार है।

B S E

प्रश्न क्र.

उत्तर- 26

अपठित गद्यांश

(i) "हिमालय पर्वत की पवित्रता"

(ii) वैदिक काल से ही हिमालय पहाड़ को बहुत पवित्र माना जाता है।

(iii) हिमालय को देखकर मन आनंद और कृतज्ञ हो जाता है।

(iv) यहाँ बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री जैसे पवित्र तीर्थ हैं।

B
S
E

(v) ① कृतज्ञता - जता ② वैदिक - दिक

16 [redacted] + [redacted] = [redacted]

योग पूर्व पृष्ठ　　पृष्ठ 16 के अंक　　कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

उत्तर- 27 (07)

सेवा मे,
श्रीमान नगरपालिका अध्यक्ष,
जिला देवास (म॰प्र)

विषय- कॉलोनी की सफाई कराने हेतु।

महोदय,
सविनय निवेदन है, कि हमारी कालोनी मे निरंतर सफाई नही हो रही है। जिस कारण से हमारे आस-पास की गंदगी अत्यधिक बढ़ रही है, जिससे अनेक प्रकार की बिमारियाँ जन्म ले रही हैं।

अतः माननीय नगरपालिका अध्यक्ष जी से मेरा निवेदन है, कि हमारी कॉलोनी मे नियमित सफाई कराऐं।

धन्यवाद

नाम - अ॰ब॰स॰
~~मनुकुमार~~

भवदीय
दिनांक - 01-03-2018　　अ॰ ब॰ स॰

प्रश्न क्र.

उत्तर- 28 (ब)

"जल संरक्षण"

रूपरेखा:-
1. प्रस्तावना
2. जल की उपयोगिता
3. जल का महत्व
4. जल का दुरुपयोग
5. जल की आवश्यकता
6. जल से लाभ
7. जल संरक्षण के उपाय
8. उपसंहार

B S E

"जल से जीवन जल ही जीवन,
जल जीवन का दाता है,
जल संरक्षण कर ले मानव,
जल भविष्य निर्माता है।"

उत्तर- 20

द्विवेदी युग की विशेषताएं निम्न हैं।

1. अंधविश्वासो व रूढ़ियो का विरोध
2. परिमार्जित भाषा शैली
3. समाज सुधार
4. राष्ट्रीयता व देशप्रेम

(18) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 18 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

उत्तर- 28 (ख)

'नारी है तो कल है'

रूपरेखा – प्रस्तावना

1. वैदिक काल की नारी
2. पुरातन काल की नारी
3. वीरांगनाएँ
4. पतन का युग
5. नारी के गुण
6. नारी की महत्ता
7. उपसंहार
8.

~~प्रस्ता~~ " नारी तुम! केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत पग तल में पियूष स्रोत सी बहा करो, सुन्दर समतल में।"

प्रस्तावना :- जिस प्रकार रथ के बिना पहियों अधुरा होता है। उसी प्रकार मनुष्य का सामाजिक जीवन, इस सत्य को भारत के ऋषि मुनियों ने पहले जान लिया था। मनु ने यह घोषणा करके की जहाँ नारी की पुजा होती है, वहाँ देवता निवास करते है। नारी की महत्ता प्रतिपादित की है।

B
S
E

(19) [ ] + [ ] = [ ]

पृष्ठ 19 के अंक    कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

वैदिक काल की नारी – वैदिक काल मे नारी को महत्व पूर्ण स्थान प्राप्त था। वह हर क्षेत्र मे अपनी प्रगति करती थी। और महत्व पूर्ण भूमिका निभाकर अपनी महत्ता प्रतिपादित किया था। वैदिक काल की नारी अनुपम थी।

पुरातन काल की नारी – पुरातन काल मे नारी की आवश्यकता कही ज्यादा ही आवश्यक थी। नारी को उच्च शिक्षा के अधिकार प्राप्त थे। व किसी क्षेत्र मे अपनी प्रगति कर सकती है। वह किसी बंधन मे बंधकर नही रहती है। उसे आजादी थी।

वीरांगनाऐं – भारत की नारी ने हर क्षेत्र मे अपनी योग्यता प्रदर्शित की है। वह वीरांगना बनकर अपने देश की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रही है। अहिल्याबाई, झांसी की रानी आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण है। झांसी की रानी मे अपनी वीरता बचपन से ही दिखाई है।

20

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 20 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

पतन का युग :- मुस्लिम युग में नारी को पर्दे के पीछे रखा जाने लगा है। वह भोग विलास की सामग्री बनकर रह गयी है।

नारी के गुण :- नारी ने अपनी सभ्यता के साथ-साथ अपने परिवार का पालन-पोषण भी एक मधुरता के साथ किया है। नारी के कई ऐसे गुण भी हैं जिनका ~~वर्णन~~ वर्णन करना कठिन है।

B
S
E

नारी की महत्ता :- आज के समय में नारी की महत्ता को कौन नहीं जानता है। वह अपनी सुरक्षा स्वयं करने को तैयार हो चुकी है। उसे किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं है।

उपसंहार :- आज यह कहना गलत भी नहीं है कि नारी है तो कल है। क्योंकि नारी की महत्ता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आज के समय में नारी को कष्ट पहुँचाना संकट से खाली नहीं है।

[ + ] =

योग पूर्व पृष्ठ कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

"अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध, आँखों में पानी।"

— मैथिलीशरण गुप्त

B
S
E